

**BHARTIY ASMITA-BHODH AUR SAMVEDANA KE SAMVAHAK MADHAVRAO SAPRE**  
**भारतीय अस्मिताबोध और संवेदना के संवाहक माधवराव सप्रे****Dr. Angadkumar Singh**Assistant Professor, Department of Hindi, Jawaharlal Nehru P.G. College, Bansgaon, Gorakhpur, Uttar Pradesh  
E-mail: anagadkumarsingh01@gmail.com

ABSTRACT

*India has never harmed anyone with malicious intent, but embraced the country of malicious intent, patted its back and expressed its goodwill, expressed only love towards it by binding it in the cord of sympathy and sympathy. Madhavrao Sapre ji was so full of Indian pride and sensibility that he came home drenched in the spirit of patriotism and stumbled upon the job of 'Tehsildar' given by the British Government. Madhavrao was an immortal and great revolutionary son of Mother India as well as a remarkable and sensitive journalist, he was a promoter of Hindi language, a strong thinker and thinker, he was the father of Chhattisgarh journalism and a sage editor, and also a heroic fighter of freedom struggle, for public works. Those who offered body, mind and wealth were the pioneers of preparing volunteers, then the inspirational-guiding gurus were also the ones who sounded the trumpet of freedom, and those who recognized the talent and made them journalists. Sapre ji made a special contribution to the Hindi renaissance by making his writing sharp and sharp through Hindi-journalism, and he was also a journalist and literary genius like the Bharatendu Mandal of the modern era. Being a journalist, Rao ji used to catch the burning problems of the society and the nation easily, and being a litterateur, he used to express the truth easily in his language by making it understandable in front of the public. Madhavrao Sapre was such a freedom fighter, inspirational personality, guide-guru, freedom leader as well as a fearless, fair and effective journalist-editor. In them there were traces of Indian identity and tender feelings towards the mother of India. After surveying and assessing the entire horizon of Madhavrao ji, it becomes self-evident that he was a big-hearted journalist. He was an awakened letter-pundit towards his time, society and nation. Madhav ji has been a model in the field of journalism.*

भारत ने कभी किसी का दुर्भावनावाश अहित नहीं किया है बल्कि दुर्भावनाग्रस्त देश को भी गले लगाकर उसकी पीठ थपथपाई और सद्भाव व्यक्त किया, सहानुभूति तथा संवेदना की डोर में बाँधकर उसके प्रति सिर्फ प्रेम प्रकट किया। माधवराव सप्रे जी में भारतीय अस्मिता और संवेदना इस तरह कूट-कूटकर भरी हुई थी कि वे देशभक्ति के भाव से सराबोर होकर घर आयी और अंग्रेज सरकार द्वारा दी गयी 'तहसीलदार' की नौकरी को ठोकर मार दी। माधवराव भारतमाता के अमर और महान क्रांतिकारी सप्रे के साथ-साथ उल्लेखनीय तथा संवेदनशील पत्रकार भी थे, हिन्दीभाषा के प्रोत्साहक थे तो प्रखर चिन्तक और विचारक भी, छत्तीसगढ़ पत्रकारिता के पितामह और मनीषी सम्पादक थे तो स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी भी, सार्वजनिक कार्यों-हेतु तन-मन-धन अर्पित करने वाले स्वयं सेवक तैयार करने के प्रणेता थे तो प्रेरक-मार्गदर्शक गुरु भी, आजादी का बिगुल बजाने वाले थे तो प्रतिभा को पहचान कर पत्रकार बनाने वाले भी। सप्रे जी ने हिन्दी-पत्रकारिता द्वारा अपनी लेखनी की धार को तेज और प्रखर बनाकर हिन्दी नवजागरण में विशेष योगदान दिया तथा वे आधुनिक युग के भारतेंदु मण्डल के समान पत्रकार और साहित्यकार दोनों गुणों से समुन्नत भी थे। पत्रकार होने के कारण राव जी समाज व राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं को आसानी से पकड़ लेते थे तो साहित्यकार होने के कारण सच को जनता के समक्ष समझने लायक बनाकर उनकी भाषा में आसानी से व्यक्त कर देते थे। माधवराव सप्रे ऐसे स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, प्रेरक व्यक्तित्व, मार्गदर्शक-गुरु, आजादी के अगुवा होने के साथ-साथ एक निर्भीक, निष्पक्ष और प्रभावी पत्रकार-सम्पादक थे। उनमें भारतीय अस्मिताबोध और भारत-जननी के प्रति ममतालु संवेदना के चटकचिह्न मौजूद थे। माधवराव जी के सम्पूर्ण चिन्तन-क्षितिज का सर्वेक्षण और आकलन करने के पश्चात् यह बात स्वतः ध्वनित हो उठती है कि वे एक विशालहृदयी पत्रकार थे। अपने समय, समाज और राष्ट्र के प्रति जाग्रत पत्र-पण्डित थे। माधव जी पत्रकारिता के क्षेत्र में एक प्रतिमान रहे हैं।

**Keywords:** Indian Tradition, Sanskar, Asmita, Samvedana, Revolutionary, Chhattisgarh Mitra.**शब्दकुंजी:** भारतीय परम्परा, संस्कार, अस्मिता, संवेदना, क्रांतिकारी, छत्तीसगढ़ मित्र।**साहित्य-समीक्षा**

सदियों पहले भारतीय इतिहास में विश्व को एक परिवार मानते हुए 'बसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना विकसित की गयी। भारत सिर्फ अपने ही देश को परिवार नहीं मानता बल्कि पूरी दुनिया में जितने भी देश हैं सभी को अपना परिवार और कुटुम्ब मानता है। भारत ने कभी किसी का

दुर्भावनावाश अहित नहीं किया है बल्कि दुर्भावनाग्रस्त देश को भी गले लगाकर उसकी पीठ थपथपाई और सद्भाव व्यक्त किया, सहानुभूति तथा संवेदना की डोर में बाँधकर उसके प्रति सिर्फ प्रेम ही प्रकट किया। यही कारण है कि कई समुदाय के लोग अपने मूल स्थान को छोड़कर यहाँ आकर सानन्द जीवनयापन कर रहे हैं। जिसका देश पूरे

विश्व को अपना परिवार मानता है वह कैसे यहाँ की संस्कृति, सभ्यता, सद्भावना, सहानुभूति एवं संवेदना से अपने को दूर रख सकता? उसके भीतर भी भारतीय परम्परा, संस्कार और संवेदना का आ जाना स्वाभाविक है। भारतीय संवेदना को अपनाकर यहाँ के लोगों ने हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए अपने हाथों को बढ़ाया है। इन्हीं सहायता करने वालों में एक नाम 'माधवराव सप्रे' का भी है।

माधवराव सप्रे जी में भारतीय अस्मिताबोध और संवेदना इस तरह कूट-कूटकर भरी हुई थी कि वे देशभक्ति के भाव से सराबोर होकर घर आयी और अंग्रेज सरकार द्वारा दी गयी 'तहसीलदार' की नौकरी को ठोकर मार दी। सप्रे जी भारतीय संवेदना को जन-जन तक पहुँचाने के लिए बामन लाखे महोदय के सहयोग से एक मासिक पत्रिका 'छत्तीसगढ़ मित्र' का सन् 1900 में सम्पादन बिलासपुर जिले के छोटे से गाँव 'पेण्ड्रा' से किया। इस पत्रिका ने मात्र 3 वर्ष की अल्पायु में वह कर दिखाया जो आज-कल के बड़े-बड़े समाचार-पत्र या पत्रिका भरपूर संसाधन होते हुए भी नहीं कर पा रहे हैं। अर्थाभाव और तमाम संघर्ष के कारण यह पत्रिका 1903 में स्थगित हो गयी।

माधवराव भारतमाता के अमर और महान क्रांतिकारी सपूत के साथ-साथ उल्लेखनीय तथा संवेदनशील पत्रकार भी थे, हिन्दीभाषा के प्रोत्साहक थे तो प्रखर चिन्तक और विचारक भी, छत्तीसगढ़ पत्रकारिता के पितामह और मनीषी सम्पादक थे तो स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी भी, सार्वजनिक कार्यों-हेतु तन-मन-धन अर्पित करने वाले स्वयं सेवक तैयार करने के प्रणेता थे तो प्रेरक-मार्गदर्शक गुरु भी, आज़ादी का बिगुल बजाने वाले थे तो प्रतिभा को पहचान कर पत्रकार बनाने वाले भी। सप्रे जी ने हिन्दी-पत्रकारिता द्वारा अपनी लेखनी की धार को तेज़ और प्रखर बनाकर हिन्दी नवजागरण में विशेष योगदान दिया तथा वे आधुनिक युग के भारतेन्दु मण्डल के समान पत्रकार और साहित्यकार दोनों गुणों से समुन्नत भी थे। पत्रकार होने के कारण राव जी समाज व राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं को आसानी से पकड़ लेते थे तो साहित्यकार होने के कारण सच को जनता के समक्ष समझने लायक बनाकर उनकी भाषा में आसानी से व्यक्त कर देते थे। 'छत्तीसगढ़ मित्र' मासिक पत्रिका के अलावा सप्रे जी ने लोकमान्य तिलक द्वारा सम्पादित 'मराठा केसरी' को 'हिन्दी केसरी' के रूप में सम्पादित किया तथा हिन्दी-कवियों और लेखकों को एकता के सूत्र में बाँधने और हिन्दीभाषा-छत्र के नीचे लाने के लिए 'हिन्दी-ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया एवं 'कर्मवीर' जो जबलपुर से प्रकाशित हुआ उसके प्रकाशन में भी महती भूमिका निभायी। खुद मराठीभाषी होकर भी हिन्दीभाषा को अपनी लेखनी का आधार बनाया। माधव जी स्वयं कहते थे कि, "मराठी मेरी मातृभाषा है, पर मैं अपनी माँ की गोद में नहीं पला हूँ।

हिन्दी मेरी मौसी है और यही मुझे पाला-सम्भाला करती है इसीलिए जो कुछ भी मुझसे सेवा बनी, मौसी की ही कर पाया।" इसमें कोई सन्देह, किसी को भी नहीं करना चाहिए कि 'हिन्दी मौसी' के इस प्रेम को सप्रे जी अपने से कभी अलग नहीं कर पाये और आजीवन इसकी सेवा में तल्लीन रहते हुए खुद को समर्पित कर दिया-महावीरप्रसाद द्विवेदी के समान।

माधवराव सप्रे जिस समय हिन्दीगद्य-लेखन-क्षेत्र में अपने पैर बढ़ाने शुरू किये थे उस समय हिन्दी-गद्य सृजनकर्त्ताओं को हेय समझा जाता तथा उपहास में 'कथक' की उपाधि से विभूषित किया जाता था। ऐसे विषम वातावरण में मजबूती के साथ पैर जमाकर बढ़ते हुए सप्रे जी ने हिन्दीगद्य के पक्ष में जबरदस्त वकालत करते हुए कहा है कि, "जिन लोगों की रुचि गद्य की ओर नहीं झुकती, जो लोग गद्य लिखने वालों को कथक कहते हैं उनके लिए यही उपाय है कि हिन्दी के सुलेखक निराशा से हत न होकर धीरे-धीरे अपना कर्त्तव्य करते जायें, आज नहीं तो कल, दस-बीस वर्षों में कभी न कभी पठित समाज पर यह बात विदित हो जायेगी कि हिन्दी साहित्य का गद्य-साहित्य, बिना गद्य-लेखकों के पूरा नहीं होगा।"

पत्रकारिता की जिम्मेदारी बखूबी निभाने के साथ ही सप्रे जी ने 'स्वदेशी आन्दोलन और बायकॉट', 'जीवन-संग्राम में विजय प्राप्ति के कुछ उपाय', 'भारतीय युद्ध' आदि जैसे मौलिक ग्रन्थों की रचना किये तो समर्थ रामदास के मूलतः मराठी में रचित 'दासबोध', लोकमान्य तिलक लिखित 'गीतारहस्य' तथा चिन्तामणि विनायक वैद्य प्रणीत 'महाभारत-मीमांसा' (महाभारत-मीमांसा, लक्ष्मीनारायण प्रेस, बनारस, प्रथम संस्करण, 1920, पृष्ठ 4, भूमिका) के अलावा दत्त भार्गव, श्रीराम चरित्र, एकनाथ चरित्र और आत्मविद्या जैसे मराठी-ग्रन्थों का हिन्दीभाषा में अनुवाद किया। 'स्वदेशी आन्दोलन और बायकॉट' ऐसी पुस्तक माधव जी ने लिखी जिससे अंग्रेज के हुक्मरान भयभीत हो गये और इसको जप्त कर लिया। राव जी में अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी और देश के प्रति अपार श्रद्धा-भक्ति तथा समर्पण का भाव विद्यमान था। इसलिए मृत्यु के आने से पहले उन्होंने यह उद्घोषणा की थी कि, "मुझे मोक्ष प्यारा नहीं, मैं फिर से जन्म लूँगा, देश का तो मोक्ष अभी हुआ नहीं।"

पत्रकार माधवराव ने जो स्वप्न देखा था उसके बारे में अपने 'छत्तीसगढ़ मित्र' (जनवरी 1900 में प्रकाशित) के प्रथम अंक में 'आत्म परिचय' देते हुए लिखा था कि, "जिस मध्यप्रदेश में लोकशिक्षा का परिणाम बिल्कुल कम है और उसके विभाग (छत्तीसगढ़) में वह केवल शून्यवत है। वहाँ विद्या वृद्धि के लिए आधुनिक नूतन मार्ग निकाले जायें अर्थात् नयी-नयी शालाएँ स्थापित की जायें, विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता दी जाय। भाषा में सुलेखकों को उत्तेजन दिया जाय, ग्रन्थ प्रकाश करने वाली मण्डलियाँ उपस्थित की जायें, प्रकाशित ग्रन्थों की समालोचना करने वाली ग्रन्थ परीक्षक

सभाएँ बनायी जायें और समाचार-पत्र तथा मासिक पुस्तक प्रसिद्ध की जायें—यह हमारा अन्तिम उद्देश्य है।” अपने स्वप्न को पूरा करने के लिए वे दिन-रात लगे रहे और उनका यह सपना समयानुसार पूर्ण हुआ तथा वे दो संस्था— पहली, ‘राष्ट्रीय विद्यालय’ और दूसरी, ‘जानकी महिला पाठशाला’ 1921 में रायपुर की धरती पर स्थापित किये तथा संचालन की पूरी जिम्मेदारी स्वयं सम्भाली। अपने अध्यापकीय जीवन में सप्रे जी ने अनेक प्रतिभाओं को खोजकर निकाला, फिर तराशा तथा बिना कोई शुल्क लिए उनके शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था की।

माधवराव सप्रे आजीवन संघर्ष करते रहे। कभी पत्रकार के रूप में तो कभी साहित्यकार के रूप में, कभी भाषा-परिष्कारक के रूप में तो कभी प्रखर चिन्तक के रूप में, कभी वीर सेनानी के रूप में तो कभी मार्गदर्शक-गुरु के रूप में। आपके इन्हीं संघर्षों और कर्तव्यबोध के कारण पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने 11 सितम्बर, 1926 को अपने पत्र ‘कर्मवीर’ में बहुत ही सटीक टिप्पणी करते हुए लिखा कि, “पिछले पच्चीस वर्षों तक पं. माधवराव सप्रे जी हिन्दी के एक आधार स्तम्भ, साहित्य, समाज और राजनीति की संस्थाओं के सहायक उत्पादक तथा उनमें राष्ट्रीय तेज भरने वाले, प्रदेश के गाँवों में घूम-घूमकर, अपनी कलम को राष्ट्र की जरूरत और विदेशी सत्ता से जकड़े हुए गरीबों का करुण क्रन्दन

बना डालने वाले, धर्म में धँसकर, उसे राष्ट्रीय सेवा के लिए विवश करने वाले तथा अपने अस्तित्व को सर्वथा मिटाकर, सर्वथा नगण्य बनाकर अपने आस-पास के व्यक्तियों और संस्थाओं के महत्त्व को बढ़ाने और चिरंजीवी बनाने वाले थे।”

### निष्कर्ष

समग्रतः माधवराव सप्रे ऐसे स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, प्रेरक व्यक्तित्व, मार्गदर्शक-गुरु, आजादी के अगुवा होने के साथ-साथ एक निर्भीक, निष्पक्ष और प्रभावी पत्रकार-सम्पादक थे। उनमें भारतीय अस्मिताबोध और भारत-जननी के प्रति ममतालु संवेदना के चटकचिह्न मौजूद थे। माधवराव जी के सम्पूर्ण चिन्तन-क्षितिज का सर्वेक्षण और आकलन करने के पश्चात् यह बात स्वतः ध्वनित हो उठती है कि वे एक विशालहृदयी पत्रकार थे। अपने समय, समाज और राष्ट्र के प्रति जाग्रत पत्र-पण्डित थे। माधव जी पत्रकारिता के क्षेत्र में एक प्रतिमान रहे हैं। सार्वजनिक जीवन में खुली किताब की तरह थे। उन्हें कोई भी बाँच सकता था। प्रेरणा के सूत्र प्राप्त कर सकता था। सप्रे जी सही अर्थ में भारतीय संवेदना के संवाहक थे। उन्होंने भारतबोध के लिए अपनी मौलिक और नितान्त नवीन दृष्टि विकसित की थी।

### सन्दर्भ

1. माधवराव सप्रे का महत्त्व, तदभव मूल से 24 नवम्बर, 2009 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 2 मई, 2009